[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3682

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

राजस्थानी लघुचित्रों के परिप्रेक्ष्य में रंगों की दार्शनिक भूमिका

उज्जवल एस.कडोड़े
स्टेट इंस्टीट्युट ऑफ फाईन आर्ट्स,रोहतक

राजस्थान में चित्रकला प्रति अभिरूचि और उसका मौलिक स्वरूप परम्परागत रूप से प्रचलित था। जो राजस्थानी परम्परा एवं संस्कृतियों को गौरवान्वित करने का श्रेय यहां की पारम्परिक चित्रकला में नारी चित्रण और रंगों की अभिव्यक्ति में दिखाई देता है। इसका प्रमाण यहां के शैलाश्रयों में प्राचीन काल में उकेरे गये रेखाकंन एवं रंग संयोजन में दिखाई पड़ता है। रंगों द्वारा तत्कालीन आकृतियों के भाव दर्शा ने का प्रारंभिक चित्रण हुआ है। 16 वीं शताब्दी से 19 वीं शताब्दी तक राजस्थानी चित्रकला निश्चय ही भारतीय कला में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। रंगों का संयोजन रेखाओं का बारीकी इस शैली की प्रधानता रही है। रेंखाकनो के साथ रंगों की विभिन्न छंटा कुशलतापुर्ण, किन्तु सरल संयोजन, रंगों का अभिव्यक्तिपूर्ण,गतिशील, सशक्त एवं आलंकारिक किया गया है।

मेवाड़ के कलाकारों ने नैसर्गिकता को एक आलंकारिक रूप में उसे प्रस्तुत किया है। चित्रों में पर्वत बताने के लिए आलंकरण, आलेखन को प्रमुखता दी है। पृथ्वी का वैशिष्टपूर्ण वातावरण निर्माण करने के लिए लाल, हरे एवं पीले रंगों का उपयोग किया है। वृक्षों के पत्ते, पुष्पित पौधे या पेड़ के पत्तों के साथ पुष्पों के गुच्छे अंकित किये हैं। राधा कृष्ण, गोप–गोपियां आदि विशेष वस्तु का आधार लेकर श्रृगांर, उत्सर्ग, श्रध्दा, समर्पण, प्रेम आदि भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न रंग, रेखाओं का तथा मुगल चित्रकला कि बाहय उत्तेजना, लालित्य एवं कमनीयता का समावेश हुआ। इस तरह 'ठोलामारू', शिवपुराण, नाथचरित्र, दुर्गाचरित्र, पंचतंत्र, रागमाला और कामसूत्र आदि ग्रंथों पर विभिन्न प्रसंगों पर चित्र निर्माण हुए और सौन्दर्यपूर्ण एवं रंगों की संयोजन से ओतप्रोत रहे। महाराजा मानसिंह एवं तख्तसिंह के काल में श्रृगांरपूर्ण और हावभाव चित्रण में रंगों की विशिष्टता दिखायी पड़ती है। जिस कारण चित्रों में विशेषता, सजीव एवं तत्कालीन सौन्दर्य की अनुभूति होती है।

देवगड़ शैली भी मेवाड शैली के विपरीत हरे, पीले रंगों का प्रचुरता से प्रयोग किया है। इसकी रेखाएं मोटी,सरल और रंगों की लेपण शैली तथा संयोजन आदि का प्रयोग भी विशेष उल्लेखनीय है। बैजनाथ कलाकार व्दारा चित्रित 'रावत नाहरसिंह जनाना में' यह चित्र भावना प्रधान रंगसंयोजन पूर्ण'प्रींस आफ वेल्स संग्रहालय', मुंबई में सुरक्षित है।'नारसिंह की प्रेमिका को प्याला देते हुये चित्रित किया है। प्रेमिका का सौंदर्य, कमनियता, प्रेम–श्रृंगार आदि के भाव एवं रंगों की विभिन्न छटाओं के प्रयोग से यह चित्र अधिक वैशिष्टयपूर्ण प्रतीत होता है। 19वीं–20वीं शताब्दी तक नाथव्दारा शैली भी विशेष उल्लेखनीय रही है। इसमें पुरुष कलाकारों के साथ महिला चित्रकारों में 'कमला', एवं 'इलायची' आदि नाम शामिल थे।

मारवाड़ शैली का विकास काल 16वीं से 17वीं शताब्दी रहा है। मारवाड में कला एंव संस्कृति को नवीन परिवेश देने का श्रेय 'मालदेव' को है। कला प्रेमी सुरसिंह के शासन काल में कलापूर्ण सचित्र ग्रंथों में 'ढोलामारू' ,रसिक प्रिया', तथा भागवत पुराणों का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन चित्रों में भड़कीले रंग और वस्त्रोंभूषणों में अभिजात्य एंव विलासिता रंगों का प्रभाव दिखता है। तथा राधा कृष्ण गीत गोविंद, रसीक प्रिया, रागरागिनी, बारहमासा पर भी विशेष रूप से रंग संयोजन, चित्रण हुआ है। यह शैली में रंगसौन्दर्य, रंगों से अंलकरण के साथ भाव को अधिक महत्व दिया है। भाव को चित्रण करने के लिए लाल, पीले, केसरिया, कुसुमल रंगों का प्रयोग किया गया जो स्थानीय तत्कालीन विशेषता थी। चित्रों में हासिएं में भी पीले रंग का प्रयोग किया गया है। मेवाड शैली का विशेष प्रभाव होने कें कारण चित्रों में रंगों की प्राथमिकता, पवित्रता और चमक यह जोधपुर शैलीकी निजी हो गई। तथा मारवाड शैलीमें लाल, पीले रंग का बाहुल्य रहा है। कोमल रंगों कें प्रयोग से नायक–नायिकाओं के भाव–भंगिमाओं का अत्यंत सुन्दर चित्रण हुआ है। बीकानेर शैली भी राजस्थानी लघुचित्र कला में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। बीकानेर शैली में कोमल रंग योजना होने से चित्र सुफियानापन लिये है। लाल, हरे, नीले रंग की रंगों का प्रयोग किया है। साथ ही पृश्ठभूमि या आधार रंग के रूप में भुंरे, गेरूई–फिरोजी या पीले–हरित रंग का भी उपयोग किया है। आकाश के नीचे जमीन को हरे व भूरे रंग की रंगों व्दारा स्वाभाविक रूप से दर्शाया है। पीला और गुलाबी तथा किनारे पर पीला और लाल रंग बीकानेर शैली के चित्रों की एक सामान्य पहचान है।

मधुरता के प्रेमी भक्त कवि नागरीदास, बनीठनी के रंगरूप सौन्दर्य कि प्ररेणा से पल्लवित तथा संसार प्रसिध्द किशनगढ़ शैलीप्रसिध्द है। 'बनीठनी' अपने अव्दितीय रंगरूप, सौन्दर्य के एवं रूपचित्रण भाव–भंगिमांये के कारण आदर्श बन गई है। चित्रों में रंगों के प्रयोग की एक विशिष्टता यह भी है कि भारवाली वस्तुओं के में गहरापन अधिक है। तथा हल्की वस्तुओं के अंकन में हल्के न्यून उर्जस्वितमा वाले रंगों का प्रयोग किया है। संबंधित चित्र के कथ्य, भावों की संप्रेषणीयता को काफी बढ़ा दिया है। आकृतियों में रंगों के कारण नाजुक भाव दिखाई पड़ते है। आकृतियों का ओज एवं रंगों का जादू, रंगों की माधुर्यता, रेखाओं की सम्पन्नता और दृश्यों के आधार देनेवाली किशनगढ की शैलीजो प्रबुध्द् दर्शक को से अलौकिक जगत् तक ले जाने में समर्थ है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

नागौर शैली भी अपनी समय कि उत्कृश्ट शैली रही है। यह शैली में स्त्री सौन्दर्य भाव, सषक्त, प्रवाह मय रेखाएं, रंग संयोजन सफल भावाभिनी व्यक्ति, स्वाभाविकता के साथ परिपक्व प्रतीत होती है। चित्रों में सफेद रंग, सुनहरे रंग का अधिक प्रयोग किया है। तथा कहीं–कहीं बूझे हुये रंगों का अधिक प्रयोग हुआ है। पारदर्शी वेशभूषा, यह शैली की निजी विशेषता है। रंगसंयोजन तथा रेखाएं बारीक प्रवाहमय है। रंग संयोजन में हरे रंग की पृश्टभूमि पर गुलाबी और भूरे रंगों का समन्वय कोटा शैलीकी नितांत नवीन संविधा को अभिव्यत्क करता है। अनेक रंगों का प्रयोग करते हुये हल्के हरे, पीले और नीले रंग का प्रयोग बहुत हुआ है। अधिकतर बार्डर लाल और नीले रंग के बने है। मुख्य चित्र के चारों ओर एक हरे रंग की रेखा बनाई गयी है। यह विशेषता बाद के कोटा चित्रों में पायी जाती है।स्त्री सौन्दर्य का चित्रण कोटा शैली में अत्यंत सुंन्दर हुआ है। राजस्थानी कला शैली में बुन्दी शैली अपनी मौलिक एवं निजी विशेषताओं के कारण प्रसिद्व है। चित्रों में नारगी, हरे, रंग का अधिक प्रदानता दिखती है। पीला, लाल, सफेद, काला, नीला आदि रंग विशेष भाव सौन्दर्य निर्माण करते है। यह शैली के चित्रों में सोने तथा चांदी के रंगो का प्रयोग, वेशभूषा, षैये एवं पात्रों में अलंकरण दर्शाने हेतु किया है। स्त्री आकृतियों को प्रायः काले रंग के लहंगे, लाल, सुवर्ण आलेखनयुक्त पारदर्शी चुनरी व धवल मोती, अंगुलियों में हाथफुल, ललाट के नीचे लटकती बिंदी अलंकारों में बाहुओं के नीचे तक झुमके विशेष है। स्त्रीयों में भावपूर्ण नेत्र, नुकिली नासिका, गोल मुख, मेहन्दी कि लालीमा युक्त उगलियां जिसे नारी सौन्दर्य को अधिक आकर्षक बनाती है। चित्रों में अंकित सुकोमल एवं चेहरों पर गोलाई लाने के लिए रंगों व्दारा छाया प्रकाष का सुन्दर प्रयास किया है। जीस कारण चित्रसंयोजन में रंगों की रेखाएं कोमल गति पूर्ण एवं भाव प्रदान है। नारी को विभिन्न रूप में चित्रित करके अधिक आकर्षक सौन्दर्य पूर्ण बनाने का प्रयत्न रंगों के संयोजन से किया है।

संदर्भः

1 *भारतीय कला सामीक्षा–डॉ, ऋतु जोहर*
2 *किसनगढ चित्र षैली–डॉ, अन्नपूर्णा षुक्ला*
3 *राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास– डॉ, गोपीनाथ षर्मा*
4 *जयपुर की चित्रांकन परंपरा– डॉ, रिता प्रताप*
5 *मारवाड की चित्रांकन परंम्परा– डॉ, धर्मवीर वषिश्ट*
6 *अलवर की चित्रांकन परम्परा– डॉ, जयसिंह नीरज एंवम बेला माथुर*
7 *राजस्थान की चित्रकला– डॉ, जयसिंह नीरज*